गौतम बुद्ध विश्विद्यालय में **134**वीं डॉ**.** भीमराव अंबेडकर जयंती का भव्य आयोजन

गौतम बुद्ध विश्विद्यालय के डॉ. अंबेडकर मानवाधिकार अध्ययन केंद्र द्वारा 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में "डॉ. अंबेडकर और आधुनिक भारत में राष्ट्र निर्माण प्रक्रियाएं" पर एक दिन का विशेष व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री नरेंद्र सिंह, डीआईजी, आईटीबीपी और सम्मानित अतिथि के तौर प्रो. राज कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय की मौजूदगी दर्ज रही। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय कुलपति प्रो. राणा प्रताप सिंह, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल की अध्यक्षया प्रो. वंदना पाण्डे, डॉ. अंबेडकर मानवाधिकार अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष डॉ. चंद्रभानु भरास तथा अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण के साथ शुरू किया गया। स्वागत भाषण के रूप में सम्मेलन केन्द्र को अंबेडकर के संघर्ष और आधुनिक राष्ट्र निर्माण के विचार से संबंध स्थापित कर परिचित कराने का कार्य कार्यक्रम की संरक्षिका प्रो. वंदना पाण्डे द्वारा किया गया। वहीं कार्यक्रम के संचालन को गति देते हुए व्याख्यान की मुख्य थीम को विस्तारपूर्वक संयोजक डॉ. चंद्रभानु भरास द्वारा परिचित कराते हुए विचार प्रेषित किया कि बिना डॉ. अंबेडकर के हम आधुनिक भारत की सोच भी नहीं सकते क्योंकि नागरिक से लेकर प्रशासन, वित्तीय, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र तक इनके विचारों को पढ़ा और अध्ययन किया जा सकता है, जो हमारे सम्मुख अनेक चुनौतियों के समाधान के रूप में मौजूद है।

मुख्य अतिथि श्री नरेंद्र सिंह द्वारा अंबेडकर के आदर्श उद्घोष शिक्षित बनो, आंदोलन करो, संगठित हो में सबसे अधिक महत्व आंदोलन/संघर्ष करो को देते हुए कहा, व्यक्ति को अपने मन और दिमाग को सत्य और असत्य की परख के आधार पर सर्वप्रथम आंदोलित करना होगा तभी वह समाज, देश को संगठित करने का सच्चा प्रयास कर पाएगा। इस तथ्य से भी अवगत कराया कि संसद के अंदर अंबेडकर वह विभूति थे जिन्होंने डटकर अनुच्छेद 370 का विरोध किया था, साथ ही अनुच्छेद 14,15 का आपके जीवन के अभिन्न हिस्से के साथ, भारत के विकास में ग्रामीण भारत के उत्थान हेतु डॉ. अंबेडकर के विचारों को युवा श्रोताओं तक पहुंचाया। सम्मानित अतिथि प्रो. राज कुमार ने अपने व्याख्यान का आरंभ डॉ अंबेडकर के तीन गुरुओं के रूप में गौतम बुद्ध, कबीर और फूले के जीवन एवं शिक्षा के अंबेडकर जी के जीवन पर प्रभाव से शुरू किया और देश की युवा पीढ़ी को राष्ट्र के मजबूत आधुनिक निर्माण हेतु व्यावहारिक शिक्षा और आलोचनात्मक चेतना के विकास पर बल देने हेतु प्रेरित किया। कुलपति महोदय प्रो. राणा प्रताप सिंह द्वारा विश्विविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए डॉ. अंबेडकर के शिक्षा प्राप्ति के समय चुनौतियों के विपरीत शिक्षा क्षेत्र में अव्वल करने और उनके संघर्ष, लड़ने की शैली ने विश्वविख्यात कोलंबिया यूनिवर्सिटी, लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स में इनकी प्रतिमा को परिसर में स्थान दिलाया। तथा विद्यार्थियों को चुनौतियों और समस्या के आने पर एक कदम पीछे लेने के बजाय अंबेडकर जी की तरह उसका हल निकलने हेतु वचनबद्ध कराया। माननीय कुलपति ने वाणी को विराम देते हुए जिंदगी लंबी नहीं महान होनी चाहिए के आदर्श-वाक्य के साथ आधुनिक राष्ट्र निर्माण के तप में युवा पीढ़ी को भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया। केंद्र अध्यक्ष डॉ. भरास द्वारा सम्मेलन केन्द्र में उपस्थित सभी संकायों और विद्यार्थियों को धन्यवाद प्रस्तुत किया और साथ ही भारी संख्या में विद्यार्थियों के उत्साह भरे माहौल के साथ उपस्थिति दर्ज होने पर अगले वर्ष ओर भी भव्य कार्यक्रम का आयोजन करने का वादा किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।